# Register.


| | Nr. | Side |
|---|---|---|
| Aanden opgav Enkesønnen | 67 | 228 |
| Abraham sad i Mamre Lund | 9 | 29 |
| Al Jeriko saa Vor Herre | 72 b | 246 |
| Alt paa den vilde Hede | 59 | 205 |
| Ansgar han laa paa Sotteseng | 101 b | 351 |
| Apostlene sad i Jerusalem | 90 | 300 |
| Blomst kan visne, før Sol nedgaar | 69 | 234 |
| Brudgom taler til Bruden sin | 61 | 212 |
| Da Moses gik paa Bjerget op | 23 | 82 |
| Da Sol gik ned i Banke | 24 | 86 |
| De kristne er en lille Flok | 111 | 387 |
| Dejlig er den Himmel blaa | 53 | 183 |
| Den signede Dag med Fryd vi ser | 106 | 366 |
| Den store Mester kommer | 48 | 166 |
| Den største Paaske, Verden har set | 77 | 259 |
| Der ganger Sagn saa vidt om Land | 52 | 179 |
| Der gik en Hyrde og vogted Faar | 18 | 67 |
| Der kom et Bud fra Himmerig | 10 | 31 |
| Der kom tre svare Hungersaar | 39 | 137 |
| Der laa en Stad paa Marken | 28 | 100 |

| | Nr. | Side |
|---|---|---|
| Der ligger en Stad i det tyrkiske Land .. | 95 | 324 |
| Der ligger en Ø i Vesterhav ..... | 99 | 339 |
| Der sad en Fisker saa tankefuld ..... | 64 | 220 |
| Der sad en Svend i Blaamænds Land .. | 93 | 307 |
| Der sad en Svend i det sorte Hul..... | 14 | 53 |
| Der skinner en Sol i Lys og Løn..... | | XV |
| Der vandred en Yngling saa tankefuld... | 60 | 209 |
| Der var en gammel Hyrde ..... | 98 | 337 |
| Der var en gammel Præsteføn ..... | 45 | 158 |
| Der var en Kæmpe over Kæmper alle ... | 31 | 115 |
| Der var en Kæmpe, stor og stærk ..... | 40 b | 143 |
| Der var paa Jord en Guds Engel saa fin | 57 | 197 |
| Det hændte sig Jefta, den Gileads Mand | 30 | 112 |
| Det var en Solskinsdag i Vaar ..... | 49 | 169 |
| Det var i Hvedehøstens Tid ..... | 27 | 98 |
| Det var saa stille ved Midjenat ..... | 32 | 119 |
| Du sande Gud, hør du min Bøn ..... | 94 | 316 |
| En Sædemand gik ud at saa..... | 62 | 215 |
| En Søndag Morgen Kvinder tre ..... | 83 | 280 |
| Et Barn er født i Betlehem ..... | 51 | 177 |
| Et lidet Barn saa lysteligt ..... | | VI |
| Et Paradis var Gosen..... | 19 | 69 |
| Faa var de Sønner, som vandrede smukt | 41 | 146 |
| Flammen, som blusser paa Altret i Kvæld | 36 | 131 |
| Fra Afguders Altre slog Røgen i Sky... | 8 | 27 |
| Frelse hver fra Aag og Plage ..... | 85 | 284 |





| | Nr. | Side |
|---|---|---|
| Fryd dig, du Kristi Brud ..... | 76 | 257 |
| Gak under Jesu Kors at staa ..... | 81 | 271 |
| Giv os, Gud, en Salmetunge..... | | II |
| Goliat drog fra Gat ..... | 33 | 124 |
| Gud naade mig stakkels gamle Mand ... | 16 | 62 |
| Gud planted en Have fra Øst til Vest... | 3 | 7 |
| Han sidder til Bords i de kæres Stad .. | 73 | 249 |
| Han, som paa Jorden bejler ..... | | XIV |
| Han var ingen mægtig Aand..... | 101 c | 354 |
| Helligaanden trindt paa Jord ..... | 91 | 303 |
| Herren Moder Eva loved ..... | 49 b | 172 |
| Herrens Hus var lagt i Støvet..... | 46 | 160 |
| Hilsæl, du store Fødselsdag ..... | 86 | 286 |
| Himmel og Jord, som for os de staa ... | 1 | 1 |
| Hos Fyrsterne sad tæt i Ring..... | 101 | 345 |
| Hos Herren paa det høje ..... | 72 | 244 |
| Hvad er det for en Snakke ..... | 65 | 223 |
| Hvem er den Drot med Ære ..... | 75 | 253 |
| Hvor stor er dog den Glæde ..... | 56 | 195 |
| Hyggelig, rolig..... | | 168 |
| Hører I? Vorherre kalder ..... | 63 | 218 |
| I Dommertiden i Betlehem ..... | 29 | 105 |
| I Kvæld blev der banket paa Helvedes Port | 82 a | 274 |
| I Nasaret der var saa smukt..... | 55 | 191 |
| I Vittenberg i Sachsenland..... | 103 | 360 |

| | Nr. | Side |
|---|---|---|
| Jeg drømte en Drøm, som blev borte igen | 47 | 162 |
| Jeg førte ret et Kongeliv | 100 | 343 |
| Jeg gik i Marken og vogtede Faar | 35 | 129 |
| Jeg havde min Vugge ved Nilens Bred | 25 | 90 |
| Jeg laa ved det samme Moderbryst | 97 b | 333 |
| Jeg var en Munk i Sachsenland | 102 | 357 |
| Jehova nedfo'r fra det høje | 22 | 79 |
| Jesus Kristus, Livets Drot | 78 a | 261 |
| Jesus himmelfaren | 89 | 299 |
| Job var en gudfrygtig Mand | 43 | 150 |
| Johannes var vor Herres Ven | 97 | 329 |
| Josva gik i Palmelunden | 26 b | 93 |
| Josva med Arken Guds Folk baned Vej | 26 c | 97 |
| Kain pløjed rask i Vaar | 5 | 11 |
| Kirkeklokke! ej til Hovedstæder | 112 | 391 |
| Kirken, den er et gammelt Hus | 109 b | 380 |
| Kirken er som Himmerige | 109 | 378 |
| Konger, som trodse den højestes Bud | 42 | 148 |
| Kong Farao vaagned en Morgenstund | 15 | 57 |
| Kong Farao var en ugudelig Krop | 17 | 65 |
| Kristus, vor Genløser blid | 80 b | 268 |
| Kvindelil! din Tro er stor | 70 b | 239 |
| Kvinden paa sin Krykke | 68 | 231 |
| Lyset ej blev i Jerusalem slukt | 38 | 135 |
| Marie hun sad paa Hø og Straa | 50 | 174 |





| | Nr. | Side |
|---|---|---|
| Med sin Alabasterkrukke | 71 | 241 |
| Mellem Brødre kaldt den lille | 34 | 127 |
| Mindes vi en fuldtro Ven | 78 b | 262 |
| Naar Nat udvælder | 6 | 14 |
| Nabots Vingaard grænsed tæt | 40 | 140 |
| O hør det, Thomas, og tro det dog | 87 | 294 |
| Om en Hedning vil vi sjunge | 66 | 226 |
| Op ad Bjerg og ned i Dal | 12 | 38 |
| Op al den Ting, som Gud har gjort | 2 | 4 |
| Opladt har Gud os Himlens Dør | 107 b | 373 |
| Op til Jerusalem vi gaa | 74 | 251 |
| Ordet var fra Arilds Tid | 107 | 370 |
| O, skriv dit Navn i deres Hjerte | | XX |
| Over Kedron Jesus træder | 79 | 263 |
| Paa Hedenskabets Grænser | 70 a | 237 |
| Paa Sletten ved Evfrat i Asialand | 7 | 25 |
| Paa Tave Bondes Ager i Birkinde By | 104 | 362 |
| Saa vil vi nu sige hverandre Farvel | | 401 |
| Salomons Visdom blev Ordsprog paa Jord | 37 | 133 |
| Sankt Peder, han ligger i Bolt og Jern | 96 | 326 |
| Sara var død, i sin Enlighed | 11 | 35 |
| Sjælesørger fra det høje | | XV |
| Solen er hed | 12 b | 43 |
| Solen, som skrider fra Øst til Vest | 4 | 9 |

| | Nr. | Side |
|---|---|---|
| Som Foraarssolen morgenrød | 82 b | 279 |
| Som Hønen klukker mindelig | | XX |
| Som Solen oprinder morgenrød | 21 | 77 |
| Som Ørnen sidder paa højen Hald | 13 | 49 |
| Sov sødt, Barnslille | 113 | 392 |
| Stille, stille, Sions Døtre smaa | 109 c | 383 |
| Store Helgen ogsaa haver | 80 | 266 |
| Søde Jesus, Julens Fyrste | 92 | 304 |
| Tag det sorte Kors fra Graven | 84 | 282 |
| Thomas Kingo er Salmisten | 105 | 364 |
| Til Himmels fo'r den Ærens Drot | 88 | 298 |
| Undervejs var til St. Peder | 94 b | 319 |
| Ved Babylons Floder | 44 | 155 |
| Ved Jordans Færgesteder | 58 | 201 |
| Vidunderligst af alt paa Jord | 108 | 376 |
| Vor Herre, han var et lille Barn | 54 | 188 |
| Vældig var Josva i Storm og i Strid | 26 | 92 |
| Vær velkommen, Herrens Aar | 110 | 385 |
| Ægypten var plaget saa saare | 20 | 73 |